# SYLLABUS

## INDIAN MUSIC

**Course No. : MU-201** **Title : Indian Music**
**Duration of Exam. : 3 Hrs** **Total Marks : 100**
**Theory Examination : 80**
**Internal Assessment : 20**

### SECTION–A

**I. Prescribed Ragas**

1. Vrindabani Sarang
2. Jounpuri

II. Writing of any one of the Chota Kayal (Dhrut) or Vilambit Khayal or Raza Khani or Maseet Khani gat in Pandit V.N. Bhatkhandey notation system from the prescribed ragas with few Tanas or Todas.

III. Writing of detailed definitions of the prescribed ragas.

IV. Writing of below mentioned Talas with definitions giving single and double laykaries in Pandit V.N. Bhatkhandey notation system.

1. Japtal
2. Dadra
3. Kahrva (including previous semester's talas)

### SECTION–B

I. Detailed study of the following Musicology :

1. Raga Lakshan, Time Theory of Indian Ragas, Margi and Deshi Sangeet.

2. Short Term Definitions :

   Taali, Khali, Sum, Bhari, Awartan, Meend, Kan, Krintan, Zamzama, Ghaseet

3. Biographical sketch of the following Musicians :

   1. Swami Hari Das
   2. Taansen
   3. Amir Khusro

**Internal Assessment (Total Marks : 08) (20%)**

08 marks for theory paper in a subject reserved for internal assessment shall be distributed as under :

| | | |
|---|---|---|
| 1. Class Test | : | 04 marks |
| 2. Two Written Assignments | : | 04 marks (02 marks each) |

**Books Recommended**

| | | |
|---|---|---|
| 1. Bhartiya Sangeet Ka Itihas | : | S.S. Paranjape |
| 2. Samgeet Bodh | : | S.S. Paranjape |
| 3. Bhat Khandey Sangeet Shastra Part-I & II | : | Pt. V.N. Bhat Khandey |
| 4. Sangeet Shastra Parag | : | Govind Rao Rajukar |
| 5. Dhavani Aur Sangeet | : | Lalit Kishore Singh |
| 6. Tal Prabandh | : | Pandit Chote Lal Mishara |
| 7. Prabhakar Prashnoter | : | Jagdish Narayan Pathak |

# INDIAN MUSIC

**Semester-II** **Single Paper Scheme**
**Section–A** **Marks : 80**

(i) Prescribed Ragas

(a) Vrindabani Sarang (b) Jounpuri

(ii) Writing of any one of the Chota Khayal (Dhrut) or Vilambit Khayal or Razakhani or Maseet Khani Gat in Pandit V.N. Bhat Khandey Notation System from the prescribed Ragas with few Tanas or Todas.

(iii) Writing of detailed definitions of the prescribed Ragas.

(iv) Writing of below mentioned Talas with definitions giving single and double layakaries in Pandit V.N. Bhat Khandey Notation System.

(a) Japtal (b) Dadra

(c) Kahrva (including previous semester's Talas)

## SECTION–A

1. Writing of Ragas and Talas of the course of study in Notation System.

1.1 Ragas

(a) Vrindabani Sarang (b) Jounpuri

1.2 Talas

(a) Japtal (b) Dadra

(c) Kehrva

1.3 Writing of detailed definitions of the prescribed Ragas, and Talas of the course of study.

# INDIAN MUSIC

**Semester-II** **Single Paper Scheme**
**Section–A** **Marks : 80**

1. Writing of Rages and Talas of the course of study in Notation System

1.1 Ragas

(a) Rag Vrindabani Sarang

(b) Rag Jounpuri

**STRUCTURE**

1.1.0 Objectives

1.1.1 Frame work of the Selected Notes (Ground Plan)

(i) Ascending Order (Aroh)

(ii) Describing Order (Avroh)

(iii) A Phrase of Selected Notes (Pakad)

1.1.2 Notation of Rag Composition (Bhat Khandey Notation System)

(a) Vocal Composition / Rag Building Block Bandish

(i) Fast (Chotta) Khayal with mention of poetic parts of the Raga composed

(Sathai-Antra) Notation of Raga Composition

(Vilambit) Khayal with mention of Parts of the Raga Composed

(Sathai - Antra) Notation of Raga Composition

Tala to which set and elaborations like 'Alap' and 'Tan'

(b) String Instrumental Compositions

(i) Fast and Vilambit Khayal with mention of Tala to which set and elaborations like Todas

1.1.3 Progress Exercise

1.1.4 Reference Books for Vocal / Instrumental Music

## 1.1.0 OBJECTIVES

After going through this topic the students should be able to :

(i) Know the identity of the Ragas.

(ii) Melodic structure of the song composition.

(iii) Rhythmic Cycle set in the tempo needed.

(iv) Know the melodic elaborations of the Raga concerned.

## RAG VRINDABANI SARANG
## (राग वृन्दावनी सारंग)

1.1.1 Frame work of the selected (Ground Plan)

(i) Ascending order (Aroh)

आरोह— नि़ स, रे, म प, नि सां।

(ii) Descending Order (Avroh)

अवरोह— सं, नि़ प, म रे सा।

(iii) A phrase of the Selected Notes (पकड) Pakad

पकड— रे म प नि़ प, म रे, नि़ सा।

1.1.2 Notation of Rag Vrindabani Sarang (वृंदावनी सारंग)

(a) Vocal Composition

(i) Fast (Chotta Khayal)

Poetic Parts : Sathai / स्थाई

मँगवा रोक रहीला मोरा,
छैल लँगरवा श्याम सुन्दरवा।

अन्तरा

जेती कहेली तेती मन में,
रहीली दैया श्याम के मनवा।।

**Notation**

राग वृन्दावनी सारंग

तीन ताल (मध्यलय) मात्रा - क्म

**स्थाई**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ब | भ म ख्र त्त | - क् क्क क्ख | क्प क्ब क्भ क्म |
| नी सां रे सां | नी प म प | नी - प म | रे - नि़ सा |
| मैं ग वा ऽ | रो ऽ क र | ही ऽ ला ऽ | मो ऽ रा ऽ |
| ` | फ | × | ख |
| नी स रे म | प म नी प | म प नी सां | रे म रे स |
| छै ऽ ल लॅ | ग र वा ऽ | श्या ऽ म सु | न्द र वा ऽ |
| ` | फ | × | ख |

**अन्तराः**

| | | | |
|---|---|---|---|
| म - प प | नी प नी नी | सां - सां सां | रें नी सां सां |
| जे ऽ ती क | ही ऽ ली ऽ | ते ऽ ती ऽ | म न में ऽ |
| नी सं रें म | रे सां नी सां | नी ऽ प म | रे रे नि़ सा |
| र ही ली ऽ | दै ऽ या ऽ | श्या ऽ म के | म न वा ऽ |
| ` | फ | × | ख |

**Tanas (ताने)**

**खाली (॰) से**

(i)

(ii) + सम् (×) से

(iii) + सम (×) से

(तिहाई सम (×) से दुगुन में (मँगवा रोक रहीला))

(iv) सम (×) से

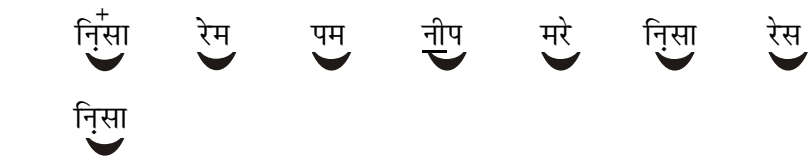

(v) सम (×) से

## PROGRESS EXERCISE

**Vocal Compositions - Ragas Vrindabani - Sarang**

1. From which beat (Matra) the (Sathai) Fast Khayal of Rag Vrindabani - Sarang Starts and on which 'beat' the 'sum' falls

_____

_____

_____

Write down the Ascending order (Aroh) and descending order (Avroh) of the notes of following Ragas (a) Vrindabani Sarang.

_____

_____

_____

Name the Raga of your course which has all 'Shudh' notes but Ni note is Komal in Avroh.

Write the Avroh.

_____

_____

_____

Mention two Tans' of eight Matras (beat) of Rag Vrindabani Sarang.

Write the notation of the 'Sathai' composition of

Fast Khayal of Rag Vrindabani Sarang

| | | | |
|---|---|---|---|
| + | | 0 | |
| क ख प ङ | ध म त्र त | – क॑ क्व क्ख | क्प क्ब क्ध क्म |
| × | 2 | 0 | 3 |

## NOTATION OF RAG VRIINDABANI-SARANG

### a) Vocal Composition.

#### i) Slow (Bada Khayal)

Poetic Parts Sathai / स्थाई

मोरी गुइय्याँ नजरिया लागी
मन विवस भयो है विरागी।

अन्तरा

रैन दिवस गिरधारी लाल के
रंग में रहूँ उनके अनुरागी

**Notation ! राग वृन्दाबनी सारंग**

**बडा याल - एक ताल**

**स्थाई**

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| - | क॰ | क्क | क्ख | क | ख | फ | ब | भ | म | स्त्र | त्त |
| निसरेम | पमपी | परे | निसा | रे | - | नि़ | सा | रे | सा | .नी | प़ |
| मोऽऽऽ | ऽऽऽऽ | री | गुइ | य्याँ | ऽ | न | ज | रि | या | ला | गी |
| फ | | ब | | × | | ॰ | | ख | | ॰ | |
| .नी | निनी | स | निरे | रे | म | प | म | नी | पम | रेरे | विसा |
| म | नऽ | वि | वस | भ | यो | है | ऽ | वि | ऽऽ | राऽ | गीऽ |
| फ | | ब | | × | | ॰ | | ख | | ॰ | |
| | | | | | अन्तरा | | | | | | |
| म | प | नीप | नीनी | सो | सांसां | रें | निसां | निसां | रेंमं | रें | निसां |
| रै | न | दिऽ | वस | गि | रऽ | घा | ऽरी | लाऽ | ऽल | के | ऽऽ |
| फ | | ब | | × | | ॰ | | ख | | ॰ | |

**अन्तरा**

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सां | नीप | नी | पम | प | मरे | निरे | सांसां | निसरेम | रेसनि़स | नीनी | सासा |
| रं | ऽग | मे | ऽऽ | र | हूँऽ | उन | केऽ | आऽऽऽ | नुऽऽऽ | राऽ | गीऽ |
| फ | | ब | | × | | ` | | ख | | ) | |

**Tanas : (ताने)**

**(i) पाँचवी (भ) से**

नि़सरेमपमरेमरेस  पमरेमपनीसंनिपम

रेमपनीसारेसानीपम  रेमरेसनिसरेसरेस  मुखडा

**(ii) पांचवीं (भ) से**

नि़सरेमरेसनि़सरेम  पमनीपरमरेनि़सरेस

सरेममरमपपमप  नीनीपनीसांसांनिसांरेंरें  मुखडा

**(iii) छठी (म) से**

पनीसंरेसनिपमरेम  पमरेमरेसनिसरेम

मपनीनीपमरेमपम  मुखडा

## PROGRESS EXERCISE

**Vocal Compositions - Ragas Vrindabani - Sarang**

1. From which Matra the 'Sathai' Bada Khayal of Rag Vrindabani-Sarang starts and on which beat the 'Sum' Falls?

_____

_____

_____

2. Write down the important notes which are usually used in Rag Vrindabani Sarang.

_____

_____

_____

3. Write two 'Tanas' of Rag Vrindabani Sarang which begins from Fifth Matras.

_____

_____

_____

**1.1.2 (b) String Instrumental Composition.**

**1.1 (a) Rag Vrindabani Sarang** (वृन्दावनी सांरग)

**1.1(a) Frame work of the selected notes (ground plan)**

1. Ascending Order (आरोह)

   आरोह— नि़ स रे म प नी सां

क. Descending Order (अवरोह)

   अवरोह— सां नी प म रे सा

**(iii) A pharse of Rag Vrindabani Sarang (Pakad)**

   पकड- नि़ सा रे म रे, प म रे, नि़ सा

**क.क.ख Notation of Rag Vrindabani Sarang (वृन्दावनी सारंग)**

**i) Fast (Razakhani) Gat**
**राग वृन्दावनी सारंग-त्रिताल-मात्रा = क्म**

**स्थाई**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ब | भ म त्र त्त | - क क्व क्ख | क्प क्ब क्भ क्म |
| | | रेरे स रे नी़ | सस नी प ऽ |
| | | दिर दा रा दा | दिर दा रा ऽ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म ऽ ऽ स | रे ऽ नि़ स | | |
| दा ऽ ऽ रा | दा ऽ दा रा | | |
| | | नि़ सस रे स | रे मम प म |
| प नीनी स रे | नी संसं नी प | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा |
| दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | | |

**अन्तरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख फ ब | भ म त्र त | – क॑ क्क क्ख | क्फ क्ब क्भ क्म |
| | | रे मम प नी | सं संसं सां सा |
| नी़ संसं रें मं | रें संसं नी स | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा |
| दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | | |
| | | सं रेंरें नी सां | नी नीनी प म |
| | | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा |
| रे मम प म | रे सस नि़ सा | | |
| दा दिर दा रा | दा दिर दा रा | | |

**Elaborations**

**Todas (तोडे)**

**(i) सम (×) से**

पम रेम पम रेम पम रेस निस

रेस तिहाई (पम रेस रेऽ)$^{फ}$

**(ii) सम (×) से**

निस रेम पनी सरें संनि पम

रेम रेस मुखडा

**(iii) सम (×) से**

रेरे सनी संस नीप नी नी पम पप

मरे तिहाई :- ( निस रेम रेऽ )प

खाली (॰) से

**(iv) खाली (॰) से**

निस रेनि सरे निसा रेम पनी मप

नीप नीसां रेनी सरें नीसां नीप मप

मरे सस तिहाई ( रेम पम रेऽ )प

**Jhala (झाला)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ढ | भ म त्र त्त | – क॰ क्क क्ख | क्प क्ब क्भ क्म |
| | | रेरे स रे नी़ | सस नी प ऽ |
| रे ऽ ऽ ऽ | स ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | नी ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ |
| | | दा ऽ ऽ ऽ | |
| म ऽ ऽ ऽ | रे ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | स ऽ ऽ ऽ | रे ऽ ऽ ऽ |
| | | दा रा रा रा | दा रा रा रा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| म ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | | |
| | | नी ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ |
| | | दा रा रा रा | दा रा रा रा |
| नी ऽ ऽ ऽ | सां ऽ ऽ ऽ | | |
| | | रे ऽ ऽ ऽ | सं ऽ ऽ ऽ |
| | | दा रा रा रा | दा रा रा रा |
| नी ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | | |
| | | म ऽ ऽ ऽ | रे ऽ ऽ ऽ |
| प ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ | दा रा रा रा | दा रा रा रा |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | | |

तिहाई ( नी नी पम रेऽ )$^{-}$

**NOTATION OF RAG VRINDABANI SARANG**

**1.1.2.1 String Instrumental Composition**

**(1) Vilambit (Maseet Khani Gat –) Raag Vrindabani Sarang**

त्रिताल–मात्रा =क्म

**स्थाई**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ब | भ म स्त्र त्त | – क् क्क क्ख | क्फ क्ब क्भ क्म |
| | | नीप | म रेरे स निसं |
| | | दिर दा | दिर दा दिर |
| रे रे रे रेरे | म पप नि स | प म रे | |
| दा दा दा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा | |

## अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ब | ध म ग्र त | – क॑ क्क क्ख | क्प क्ब क्ध क्म |
| | | पप | म पप नि प |
| नी नी सां संसं | रें मंमं पं मं | रेंमं रें सं दिर | दा दिर दा रा |
| दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा | |
| | | रेरे | सं निनि प म |
| प नी सं संसं | नि पप म प | म रे स दिर | दा दिर दा रा |
| दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा | |

**तोडे**

**(i) म छठी मात्रा से**

सरमरे ममरेस रेमपनी मपनीप

नीपमप रेसऩीस मुखडा

**(ii) ब चौथी मात्रा से**

रेमपम रेमपप रेमरेस रेसनि़स

नि़सरेम पऽपनि रेऽसनि़स

निसरेम मुखडा

**(iii) ध पांचवीं मात्रा से**

रेसरेनि़ ऽसरेम पऽपऽ

पनीसनी संरेनीसं नीपमप

मरेनिस मुखडा

**(iv) ७ चौथी मात्रा से**

रेमपप रेरेसऽ रेमपम रसनि़स

सरेमप रेमपनि सरेंसनि़ पमरेस

मुखडा

**Rag Jounpuri : (जौनपुरी)**

**1.1.1 Framework of the Selected Notes (Ground Plan)**

**(i) Ascending order (Arohi)**

आरोह :- स रे म प, ध़ नि़ सां।

**(ii) Descending order (Avrohi)**

अवरोह :- सां नि़ ध़ प, म ग़ रे स

**(iii) A Phrase of Rag Jounpuri (जौनपुरी)**

पकड :- म प, नि ध़ प, ध़ म प ग़ रे़ म प

**1.1.2 Notation of Rag Jounpuri (जौनपुरी)**

**(a) Vocal Composition**

**(i) Fast Chhota Khayal**

Poetic Parts :- Sathai स्थाई

परिये पायन वाके सजनी
जो ना माने गुनियन की सीख

**Antra / अन्तरा**

हाथ जोर फिर न्यारों होवे
ऐसे नर के पासन जैये
दर सक हेवा सोनित डरिये
परीये

**Notation राग जौनपुरी - त्रिताल मात्रा = क्म**

**स्थाई**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प | नि | म स | |
| म म प सां | ध̲ — पध मप | ग̲ — रे म | प प प — |
| प रि ये ऽ | पा ऽ यऽ नऽ | वा ऽ के ऽ | स ज नी ऽ |
| . | फ | × | ख |
| म प़ | सां़ | सां | नि̲ |
| प — ग̲ — | रे — सां — | नि̲ नि̲ सां सां | रे ध̲ — प |
| जो ऽ ना ऽ | मा ऽ ने ऽ | गु नि य न | की सी ऽ ख |
| क | फ | × | ख |
| प नि̲ | सां | अन्तरा | सां |
| म — प ध̲ | — ध̲ नि̲ नि̲ | सां — सां — | नि̲ सां सां — |
| हा ऽ थ जो | ऽ र फि र | न्या ऽ रो ऽ | हो ऽ वे ऽ |
| . | फ | × | ख |
| नि̲ नि̲ | ध̲ | म़ | सां |
| ध̲ — ध̲ — | सा सा सा — | सरें ग̲ रे सं | रे नि̲ ध̲ प |
| ऐ ऽ से ऽ | न र के ऽ | पाऽ ऽ स न | जै ऽ ये ऽ |
| . | फ | × | ख |
| ध प | सा | सा | सा नि̲ |
| प प ग̲ ग̲ | रे — सां — | नि̲ — सां सां | रें रें ध̲ य |
| द र स क | हे ऽ वा ऽ | सो ऽ नि त | ड रि ये ऽ |
| . | फ | × | ख |
| प | | | |
| ध̲ म प सा | | | |
| प री ये ऽ | | | |

**Tanas (ताने)**

**(i) खाली (ं) से**

**(ii) सम (×) से**

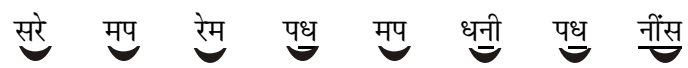


**(iii) सम (×) से**

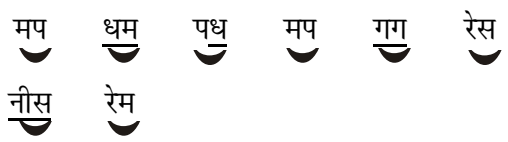


**(iv) सम (×) से**

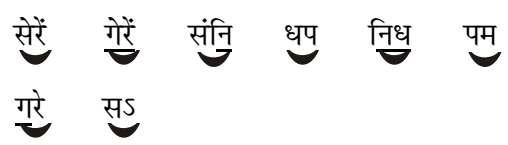


**(v) सम (×) से**

तिहाई सम (×) से दुगुन में
(परिये पायन वाके सज)[घ]

**क.क.प Progress Exercise Ragas**

**Vocal Compositions Rag Vrindabani Sarang, Jounpuri.**

1. From which beat (matra) the Sathai Fast Khayal of Rag Vrindabani Sarang starts and on which 'beat' the "Sum" falls?

_____

_____

_____

2. From which note the 'Sathai' of Fast Khayal of Rag Jounpuri starts and of which note the 'Sum' falls?

_____

_____

_____

3. Write down the 'Pakad' of the following Ragas?

   (a) Vrindabani Sarag Jounpuri.

_____

_____

_____

4. Write down the Ascending order (Aroh) and descending order (Avrohi) of the following notes of the following Ragas :–

   Vrindibani Sarang (Jounpuri)

_____

_____

_____

5. Name the Ragas of your course which has GA DA Ni Komal notes? Also write its Avroh.

_____

_____

_____

6. Write the Notation of the 'Sathai' of Rag Vrindabani Sarang (Fast Khayal)

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ब | ध म त्र त | – क॑ क्क क्ख | क्प क्ब क्ध क्म |

7. Write two 'Tanas' of Eight Matras (beat) each of the following Ragas :-

(i) Rag Vrindabani Sarang

(ii) Rag Jounpuri

_____

_____

_____

**Notation of Rag Jounpuri**

**(a) Vocal Composition**

**(i) Slow (Bada Khayal)**

**Poetic Parts Sathai / स्थायी**

कैसे के आँवू पिया तोरे पास
दुरजन लोग करे हास

अन्तरा

एक डर है मोहे सासन नन्द को
दूजे सौतन के बास

## Notation राग जौनपुरी

### बडा याल — तीन ताल

**स्थाई**

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्फ | क्ब | क्भ | क्म | क | ख | फ | ब | भ | म | स्त्र | त्त | – | क | क्क | क्ख |
| म | | | पनि | | | | | प | प | प | प | म | | सा | |
| रे | म | प | संसं | नि | ध | प | — | धम | म | प | ध धमप | ग | — | रे | स |
| कै | से | के | आऽ | उँ | ऽ | ऽ | ऽ | वीऽ | या | ऽ | तोऽरेऽ | च | ऽ | ऽ | स |
| फ | | | | × | | | | ख | | | | . | | | |
| नि | नि | नि | | ध | | | | प | प | प | प | म | | सा | |
| सा | ध | ध | प | पध | पधनि | धप | धम | म | म | प | धधपमप | ग | — | रे | स |
| दू | र | ज | न | लोऽ | ऽऽऽ | गऽ | ऽऽ | क | रे | ऽ | ऽऽऽऽऽ | हा | ऽ | ऽ | स |
| फ | | | | × | | | | ख | | | | . | | | |

**अन्तरा**

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | नि | | नि | | | | | | सां | | | |
| म | म | प | प | ध | — | ध | प | सां | — | सां | सां | नि | सां | ऽ | सां |
| ए | क | ऊ | र | है | ऽ | मो | हे | सा | ऽ | स | न | न | द | को | ऽ |
| फ | | | | × | | | | ख | | | | . | | | |
| नि | | | | सा | | सा | | रे | | | | | | | |
| ध | — | सां | रें | ग | ऽ | रे | स | नि | — | सां | रें | नि | ध | — | प |
| दू | ऽ | जे | ऽ | सौ | ऽ | त | न | के | ऽ | ऽ | ऽ | बा | ऽ | ऽ | स |
| फ | | | | × | | | | ख | | | | . | | | |
| प | | | पनि | | | | | | | | | | | | |
| ध | म | प | सांसं | | | | | | | | | | | | |
| कै | से | के | आऽ | | | | | | | | | | | | |

**Tanas : तानें**

**छठी (म) से**

सरेमग रेसरेम पनि धप मगरेस

मपधनि धपमग रेसरेम

(ii) नि॒सरेम पधमप रेमपनि धपमप

मपधनि संनि धप मपधनि

(iii) सरेमप रेमपध मपधनि पधनिसं

धनिसारें गं गंरेंसं रेरेसंनि ससंनि ध

निनि धप मपधप मगरेस रेमपऽ

## PROGRESS EXERCISE

**Vocal Compositions Ragas Jounpuri**

1. From which Matra the 'Sathai' of Bada Khayal Rag Jounpuri starts and which 'beat' the "Sum" Falls?

_____

_____

_____

2. Write down the important notes which are usually used in Rag Jounpuri.

_____

_____

_____

3. Write two 'Tanas' of Rag Jounpuri which starts from Sixth Matras.

1.1.2 (b) String Instrument Composition

1.1.(a) Raj Jounpuri (जौनपुरी)

1.1.1. Framework of the Selected Notes (Ground Plan)

1. Ascending order (आरोह)
   आरोह सा रे म प, ध़ नी़ सां

क. Descending order अवरोह
   अवरोह सा नि़ ध़ प, म ग़ रे स,

iii) A Phrase of Rag Jounpuri (Pakad)
   पकड :- म प, नी़ ध़ प, ध़ म प ग़ ऽ रे म प ।

_____

_____

_____

**क.क.ख Notation of Rag Jounpuri (जौनपुरी)**

**(i) Fast (Razakhani) Gat राग जौनपुरी**

**स्थाई**

**त्रिताल मात्रा = क्म**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख फ ब | ध म त्र त्त | - क ं क्व क्ख | क्फ क्ब क्ध क्म |
| | | ध़ मम प सं | नी़ ध़ ध़ पध़ मप |
| | | दा दिर दा रा | दा दिर दारा दारा |
| ग़ ऽ रे स | रे म प ऽ | | |
| दा ऽ दा रा | दा रा दा ऽ | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | स रेरे म म | रे मम प प |
| | | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा |
| सं निनि ध प | धनि सरैं सनि धप | | |
| दा दिर दा रा | दारा दारा दारा दारा | | |

**अन्तरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख फ ब | भ म त्र त | - क॑ क्व क्ख | क्फ क्ब क्भ क्म |
| | | ध मम प प | ध ध ध नि नि |
| सं सुंसुं सं सं | रें नि सं सं | दा दिर दा रा | दा दिर दा रा |
| दा दिर दा रा | दा रा दा रा | | |
| | | रे रेंरें रे रें | रें ग रें सं |
| संरे गंरे सनि धप | नि ध पम गरे सऽ | दा दिर दा रा | दा रा दा रा |
| दारा दारा दारा दारा | दारा दारा दारा दारा | | |

**Elaborations :**

**Todas : (तोडे)**

**(i) सम (×) से**

मग रेस रेंम पध नीसं रेसं नीसं नीध

तिहाई : ( सरे मप धऽ )

**(ii) सम (×) से**

सरे मग रेस सरे मप धनी संसे रेंसं

तिहाई : ( ऽ मप धऽ )

**(iii) सम (×) से**

सरे गरे संनि धप नि ध पम गरे सऽ

मुखडा

**(iv) सम (×) से**

मप धम गरे सरे मप ध नी

सरे मप धप -ध नीध नी

सरें संगं ऽरें संनी

तिहाई — ( ऽध मप गऽ रेम पऽ ऽ )[प]

**Jhala (झाला)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख फ ब | भ म स्त्र त्त | - क् क्क क्ख | क्फ क्ब क्भ क्म |
| | | ध ममं प सं | वी धं धं पधं मप |
| | | दा दिर दा रा | दा दारा दारा दारा |
| सं ऽ ऽ ऽ | सं ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | ध ऽ ऽ ऽ | नी ऽ ऽ ऽ |
| | | दा | |
| सं ऽ ऽ ऽ | रें ऽ ऽ ऽ | | |
| | | सं ऽ ऽ ऽ | नी ऽ ऽ ऽ |
| | | दा रा रा रा | दा रा रा रा |
| ध ऽ ऽ ऽ | ध ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | | |
| | | प ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ |
| | | दा रा रा रा | दा रा रा रा |
| रे ऽ ऽ ऽ | म ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | | |
| | | प ऽ ऽ ऽ | प ऽ ऽ ऽ |
| | | दा रा रा रा | दा रा रा रा |
| नी ऽ ऽ ऽ | ध ऽ ऽ ऽ | | |
| दा रा रा रा | दा रा रा रा | | |

तिहाई : ( सरे मप घऽ )[-]

## NOTATION OF RAG JOUNPURI

### 1.1.2 (a) String Instrumental Composition

#### 1. Vilambit (Maseet Khani Gat :- Rag Jounpuri)

त्रिताल - मात्रा = क्म

स्थाई

| | | | |
|---|---|---|---|
| क ख प ब | भ म स्त्र त्त | - क् क्क क्ख | क्प क्ब क्भ क्म |
| | | पुस | ध मपु गु रेमु |
| | | दिर | दा दिर दा दिर |
| प प प पुध | म रेमु प धपु | गु रे स | |
| दा दा रा दिर | दा दिर दा दिर | दा दा रा | |
| | | स रे | नी धधु प़ मपु |
| | | दि र | दा दिर दा दिर |
| धु नी स रेरे | म दपु धु मपु | गु रे स | |
| दा दा रा दिर | दा दिर दा दिर | दा दा रा | |

अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | मुम | प धु ध नी नी |
| सं सं सं रेरे | गं रेरे सं रें | नी ध प दिर | दा दि़र दा रा |
| दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा | |
| | | पुध | म मपु गु रे |
| | | दिर | दा दिर दा रा |
| म प प पुध | म रेमु प ध | गु रे स | |
| दा दा रा दिर | दा दिर दा रा | दा दा रा | |

**तोडे :**

**(i) ६ छठी मात्रा से**

६
संरेंगरें संनीधप नीधपम गरेसरे

मपधनी सांऽऽऽ मुखडा

**(ii) ५ पांचवीं से**

५
पधमप धमपध मपमग रेंसरेनी

सरेरेम मपपध धनीनीसं

मुखड़ा

**(iii) ७ सातवीं से**

७
सरेमप धनीसरें गरेंसंनी धपमग

रेसरेम मुखड़ा

**(iv) ४ चौथी से**

४
पधनींस नीधपप धमपध गगरेस

सरेगम रेमपप धनीसंसं गरेसंसं

मुखड़ा

**(v) २ दूसरी से**

२
पसंनीध पनीधप धमपध गगरेस

नीधमप गगरेस संरेगंरे संनीधप

धमपध गगरेस

मुखड़ा

# WRITING OF RAGAS AND TALAS OF THE COURSE OF STUDY IN NOTATION SYSTEM

## 1.2 TALAS

(a) Japtal

(b) Dadra

(c) Kehrva

**STRUCTURE**

1.2.0 Objectives

1.2.1 Framework of beats Introduction

(i) Total Number of beats in a Tala Cycle

(ii) Division of beats in the 'Tala'

(iii) Order of beats in each division

(iv) Location of Talas and Khalees

1.2.2 Notation of the tala Composition/Rhythmic Pattern

(i) Single tempo/Basic rhythm/ठाह लय

(ii) Double tempo (दुगुन लय)

1.2.3 Progress Exercise.

1.2.4 Books to be studied

### 1.2.0 OBJECTIVE

After going through the topic students should

(i) know how to identify talas.

(ii) Know the rhythemic pattern of the tala cycle.

(iii) understand how to write the layakaries of tala.

(iv) ability to know the utility of tala in Melodies.

## 1.2(a) Japtal (झपताल)

### 1.2.1. Introduction/Frame work of beats

**ताल परिचय**

तबले की मु य प्रचलित तालों में झपताल भी एक है। इसका प्रयोग याल अंग की गायकी, तन्त्र वाद्यों की गतों में तथा तबले पर स्वतन्त्र वादन में भी किया जाता है। ध्रेपद गायन की एक विशेष शैली का नाम 'सीदरा' है। इसके साथ सदा झपताल ही बजती है। यह मु यता मध्यलय की ताल है। प्राचीन तालों में एक झपताल क मात्रा की मिलती है। परन्तु इसका छंद फ/फ/ब है, जबकि प्रचलित झपताल का छंद ख/फ/ख/फ है। इसमें पेशकारा कायदा टुकड़ा चरन आदि सभी कुछ बजाया जाता है। इस ताल में क मात्राएं होती है चार विभाग ख-ख मात्राए के व दो दो विभाग फ-फ मात्राएं को दो दो विभाग होते है। पहली मात्रा (सम) तीसरी व आठवीं मात्रा पर ताली व छठी मात्रा पर खाली पड़ती है।

### 1.2.2. Notation झपताल= मात्रा=क

**(i) Single Tempo/Basic Rhythm (ठाह लय)**

| मात्रा : | क | ख | फ | ब | भ | म | त्र | त | – | क |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बोल | धी | ना | धी | धी | ना | ती | ना | धी | धी | ना |
| ताल | × | | ख | | | | | फ | | |
| चिंह | | | | | | | | | | |

**(ii) Double Tempo (दुगुन लय)**

| ताल चिंह | धी ना | धी धी | ना ती | ना धी | धी ना |
|---|---|---|---|---|---|
| | × | | ख | | |
| | धीना | धीधी | नाती | नाधी | धीना |
| | | | फ | | |

**(b) Dadra (दादरा ताल)**

### 1.2.0. Introduction/Frame work of beats

**ताल परिचय**

उ□ार भारतीय लोक संगीत के दो आधार तालों में से एक दादरा ताल है। यह लोक संगीत भाव संगीत, फिल्म संगीत एवं भजन के साथ संगत करने का एक अत्यन्त प्रचलित व एक

लोकप्रिय ताल है। यह ताल ढोलक, ताल, नगाडा, ताशा, जैसे वाद्यों पर खूब खिलता है। यह तबले पर भी सुन्दरता से बजाया जाता है। चंचल प्रकृति का ताल दादरा, मु यत: मध्यलय में भी बजाया जाता है। इसमें ठेके के विभिन्न प्रकार बजाये जाते हैं। इस ताल में ६ मात्राएं होती है फ-फ मात्राओं के ख भाग होते हैं। पहली मात्रा (सम)चौथी मात्रा पर खाली (ं) आती है।

### 1.2.1. Notation दादरा ताल = ६

### (i) Single Tempo/Basic Rhythm (ठाह लय)

| मात्रा : | क | ख | फ | ब | भ | म |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बोल | धा | धी | ना | धा | तू | ना |
| ताल चिंह | × | | | ं | | |

### (ii) Double tempo (दुगुन लय)

ताल चिंह धा धी ना धा तू ना

×

धा धी ना धा तू ना

### (c) Kahrva (कहरवा ताल)

### ताल परिचय

उ□ार भारत के लोकप्रिय ओर प्रचलित तालों में कहरवा ताल का नाम सर्वप्रथम आता है। इस ताल की उत्पट्टि लोक धुनों और लोक गीतों के साथ मानी जाती है। अत: यह ताल आधुनिक सभी शास्त्रीय तालों से अधिक प्राचीन है। उट्टार भारत में कंहार एक मेहनतकश व पिछडी जाति है वह शादी विवाह के अवसरों पर प्रसनता व्यस्त करने के लिए तृप्त करते हैं व उसके साथ इस ताल कहरवा का प्रयोग करते हैं व इसमें 'कहरवा नाच' कहा जाता है। कहरवा ताल में लगी बोल बाँट उलट फेर कर बजाने में आनन्द आता है।

### 1.2.1. Introduction/Frame work of beats

इस ताल में ब मात्राएं होती हैं। ख-ख मात्राओं के ख भाग होते हैं।

पहली मात्रा (सम) तीसरी फ पर खाली (ं) आती है।

### 1.2.2. Notation कहरवा ताल-मात्रा = ८

**(i) Single Tempo/Basic Rhythm (ठाह लय)**

| मात्रा : | क | ख | फ | ८ |
|---|---|---|---|---|
| बोल | धागे | नति | नक | धि |
| ताल | × | | | |
| चिंह | | | | |

**(ii) Double Tempo (दुगुन लय)**

| ताल | धागे नति | नक धिं |
|---|---|---|
| चिंह | × | |

### 1.2.2. Progress Exercise

(i) What is the total No of beats in the following talas :-
Japtal, Dadra Kehrva.

(ii) Write symbols of 'Sum' and Khali in a tala cycle.

(iii) On which beats the 'Sum' and 'Khali' falls in the following Talas cycles :-
Japtal, Dadra Kehrva

(iv) How many Divisions each of the talas have? Also mention the order of beats in each divsion. Japtal, Dadra, Kehrva

### 1.2.3 Book to be studied for rhythmic pattrens

(i) Tal Malika by Dr. Rajeev Sharma

(ii) Tal Parichay by Girish Vastava (Vol-I)

(iii) Tabla Vadan by Girish Vastava (Vol-I)

(iv) Sangeet Shastra Darpan by Smt. Shanti Goverdhan (Pub Ratnakar) Pathak 8-8 Mahajani-Tala-Allahabad) Vol-I

(v) Sangeet Visharad by Basant. (Pub Sangeet Karalaya – Hathras 204101-4-P) Specimen of the Questions generally set from Section-I

(vi) Tal Koash by Girish Chandra Srivastava

1. Write the Notation of any Fast (Dhrut) Composition of Razakhani Gat in any one of the following Ragas:-

   (a) Rag Vrindabani Sarang

   (b) Jounpuri

OR

1. Write the Notation of Chotta Khayal of Raza Khani Gat in anyone of your course with at least two Tanas of Todas. of eight beats (Notation with Tehai)
2. Write in Notation Ektal two different layakaries of the following Talas :- Teental.
3. Write the Notation of any two of the following Talas, reducing them to two different layalkaries Japtal, Dadra.

OR

Write the Notation of any two Talas of your course which have equal number of beats. Also reduce them to two layakaries.

---

# INDIAN MUSIC

**Semester-II** **Single Paper Scheme**
**Section–A** **Marks : 80**

## 1. WRITE DEFINITION OF RAG VRINDABANI SARANG

**STRUCTURE**

1.0 Objectives.

1.1 Identification of Raga

1.2 Frame work of Selected Notes (Ground Plan)

(i) Ascending order. (Aroh)

(ii) Descending order (Avroh)

(iii) A Phrase of Selected Notes (Pakad)

1.3 Distinctive Features

1.(a) Rag Vrindabani Sarang

### 1.1.1. Indentification of Raag Vrindabani Sarang

दोहा - जब तीखोहि निखाद है लठेत द्यैवत नाहिं।
तब यह सारंग रागहिं विन्दावनी कहाई॥

**राग विवरण :-** इस राग की उत्पत्ति काफी थाट से मानी जाती है। इसमें गन्धार द्यैवत स्वरों का प्रयोग बिल्कुल ही नहीं होता इसलिए इसकी जाति औडव-औडव है। दोनों निषाद का प्रयोग होता है। आरोह में शुद्ध नी और अवरोह में कोमल नी का भी प्रयोग होता है। अन्य सब स्वर कुछ शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर रिषम व स वादी स्वर पंचम माना जाता है। गाने बजाने का समय दोपहर (मध्याह्न)

## 1.2 Frame work of Selected Notes (Ground Plan)

i) Ascending order. (Aroh)

आरोह :- नि स रे म प नी सां

ii) Descending order (Avroh)

अवरोह - स नी प म रे स,

iii) A Phrase of Selected Notes (Pakad)

पकड - नि स रे म रे, पम रे, नि सा।

## 1.3 Distictive Features

**विशेष विवरण :-** इस राग को सारंग भी कहते है। सारंग के अन्य प्रचलित प्रकार भी है। जैसे :- शुद्ध सारंग, मियाँ की सारंग तथा मधुमाद सारंग। पर वृन्दावनी सारंग इन सभी से विभिन्न है। इस राग में अवरोह में शुद्ध धैवत का प्रयोग वर्जित है। इससे राग के सौन्दर्य में वृद्धि होती है पर ऐसा बन्दिशे व गायन में कम ही दिखाई देता है।

राग वृन्दावनी सारंग के न्यास के स्वर:-

स, रे, प,

यह सारंङ्ग का एक प्रकार है जो वृन्दावन में प्रचलित एक लोकगीत के आधार पर निर्मित हुआ है। प्रचार में इसे केवल सारङ्ग कहा जाता है। यह ठुमरी का राग नहीं है।

# INDIAN MUSIC

**Semester-II** **Single Paper Scheme**

**Section–A** **Marks : 80**

## WRITE DETAILED DEFINITION OF RAG

### RAG : JOUNPURI

**STRUCTURE**

1.0 Objectives.

1.1 Identification of Raga

1.2 Framework of Selected Notes (Ground Plan)

(i) Ascending order. (Aroh)

(ii) Descending order (Avroh)

(iii) A Phrase of Selected Notes (Pakad)

1.3 Distnictive features

1.4 Progress Exercise :

1.5 Reference Books

**1.0 Objectives**

After going through this topic, the students should be able to:-

i) know the identity of the Raga

ii) know the melodic structure of the Raga (tonality)

iii) know the special featues

## 2. Rag Jounpuri

### 1.1 Identification of Rag Jounpuri

दोहा : ग ध नि स्वर कोमल रहे,
आरोहन गा धानि
ध ग वादी-स वादी से जौनपुरी पहचानो

**राग विवरण :-** यह राग आसावरी थाट से उत्पन्न माना गया है। इसमे ग, ध और नि स्वर कोमल लगते है। आरोह में ग वर्ज्य हैं और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किये जाते है। इसलिये इसकी जाति षाडव-स पूर्ण है। वादी ध और संवादी ग है। दिन के दूसरे प्रहर में इसे गाते बजाते हैं।

**मतभेद :-** इसके आरोह में कभी-कभी कुछ गायक शुद्ध नि प्रयोग करते हैं। प्रचार में केवल कोमल निषाद है।

### 1.2 Framework of Selected Notes (Ground Plan)

i) Ascending order. (Aroh)
आरोह :- सा रे म प ध़ नी़ सां

ii) Descending order (Avroh)
अवरोह :- सां, नी़ ध़ प़, मग़ रे स

iii) A phrase of Selected Notes (Pakad)
पकड, म प, नि़ ध़ प, ध़ म प ग़ ऽ, रे म प

### 1.3 Distinctive features

**विशेषता :**

क. कुछ विद्वानों की धारणा है कि जौनपुरी के सुल्तान हुसेन शाह ने इस राग की रचना की थी। इसलिये इसे जौनपुरी राग कहा गया है।

ख इसे आसावरी राग से बचाने के लिये रे म प, बार-बार प्रयोग करते हैं।

फ. यह उ□रांग वादी राग है अतः इसकी चलन अधिकतर सप्तक के उ□र अङ्ग तथा तार सप्तक में होती है।

ब. इसमें प ग की सङ्गति बार-बार दिखाई जाती है। जैसे घ म प ग ऽ रे म प, ह्य

**न्यास के स्वर :** सा और प।

**समप्रकृति राग :** आसावरी।

**आसावरी :** सा, रे म प, ध म प ग ऽ रे स,

**जौनपुरी :** सा, रे म प, ध प म प गऽ रे म प

**विशेष स्वर सङ्गतियाँ**

क. म प ग ऽ रे म प

ख रे म प, नि ध प

फ म प, ध नि सां

ब म प ध म प ग ऽ रे म

# SECTION-B

## 1. DETAILED STUDY OF THE FOLLOWING MUSICOLOGY

### क.क. राग लक्षण

क.क.क परिचय

क.क.ख क राग लक्षणों के नाम

क.क.प राग लक्षणों का वर्णन

क.क.ब आधुनिक राग लक्षण

क.क.भ सारांश

क.क.म प्रश्न

### क.ख. रागों का समय सिद्धान्त

क.खक परिचय

क.खख पूर्वांग तथा उ□रांगवादी राग

क.खप रे ध स्वर कोमल वाले राग (संधिप्रकाश राग)

क.खब रे ध स्वर शुद्ध वाले राग

क.खभ ग नी स्वर कोमल वाले राग

क.खम ऋतुओं के आधार पर

क.खत्र अध्वदर्शक स्वर

क.खत्त सारांश

क.ख- प्रश्न

### क.फ. मार्गी और देशी संगीत

क.फ.क परिचय

क.फ.ख लक्ष्य

क.फ.प मार्गी संगीत

क.फ.ब मार्गी संगीत की विशेषताएं

क.फ.भ देशी संगीत

क.फ.म देशी संगीत की विशेषताएं

क.फ.त्र सारांश

क.फ.त्त प्रश्न

क.फ.- पुस्तकों की सूचि

## 2. SHORT TERM DEFINITIONS

ख.क ताली

ख.ख खाली

ख.फ सम

ख.ब भरी

ख.भ आवर्तन

ख.म मींड

ख.त्र कण

ख.त्त कृन्तन

ख.- ज़मज़मा

ख.क घसीट

ख.क्क प्रश्न

ख.क्ख पुस्तकों की सूचि

## 3. BIOGRAPHICAL SKETCH OF THE FOLLOWING MUSICIANS

### फ.क स्वामी हरिदास

फ.क.क परिचय

फ.क.ख जन्म एवं परिवार

फ.क.फ सांगीतिक कार्य

फ.क.ब आध्यात्मिकता

फ.क.भ मृत्यु

फ.क.म सारांश

फ.क.त्र प्रश्न

**फ.ख तानसेन**

फ.खक परिचय

फ.खख जन्म एवं परिवार

फ.खफ संगीत शिक्षा

फ.खब सांगीतिक प्रतिभा

फ.खभ सांगीतिक रचनाएं

फ.खम वंश पर परा

फ.खत्र मृत्यु

फ.खत्त सारांश

फ.ख- प्रश्न

**फ.फ अमीर खुसरो**

फ.फ.क परिचय

फ.फ.ख जन्म एवं परिवार

फ.फ.फ सांगीतिक कार्य

फ.फ.ब गायन विधाओं का आविष्कार

फ.फ.भ संगीत वाद्यों का आविष्कार

फ.फ.म मृत्यु

फ.फ.त्र सारांश

फ.फ.त्त प्रश्न

फ.फ.- पुस्तकों की सूचि

**पुस्तकों की सूचि**

## SECTION-B

# (1) DETAILED STUDY OF THE FOLLOWING MUSICOLOGY

### क.क Raag Lakshan (राग लक्षण)

#### क.क.क परिचय

प्राचीन काल में 'जाति गायन का प्रचार था एवं जातियों के क लक्षण माने जाते थे। 'जाति गायन' के बाद जब 'राग गायन' का प्रचार प्रार भ हुआ तो जाति गायन के यही क लक्षण संगीत विद्वानों द्वारा राग के लक्षण माने गए।

#### क.क.ख क राग लक्षणों के नाम

प्राचीन संगीत विद्वानों द्वारा वर्णित रागों के क लक्षण हैं— ग्रह, अंश, न्यास, अपन्यास, सन्यास, विन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाडत्व, औडत्व, मंदू एवं तार।

#### क.क.फ राग लक्षणों का वर्णन

क. ग्रह स्वर-प्राचीन समय में राग के गाने या बजाने का एक प्रारि भक स्वर निश्चित होता था जिसे ग्रह स्वर कहते थे।

ख अंश स्वर-राग में सबसे ज्यादा प्रयोग में आने वाले स्वर को अंश स्वर कहते थे। आधुनिक काल में जो ाहǍव वादी स्वर का है वही प्राचीन काल में अंश स्वर का था।

फ. न्यास स्वर- जिस स्वर पर राग या जाति की समाप्ति होती थी उसे 'न्यास स्वर' कहते थे।

ब. अपन्यास-जिस स्वर पर गीत के मध्य की समाप्ति होती थी वह अपन्यास स्वर कहलाता था।

भ. सन्यास-जिस स्वर पर गीत के पहले भाग की समाप्ति हो उसे सन्यास कहते थे।

म. विन्यास–जो स्वर जाति या राग के विभिन्न खंडों की समाप्ति का स्वर होता था उसे विन्यास कहते थे।

ख अल्पत्व–राग में किसी स्वर का अल्प प्रयोग अल्पत्व कहलाता है। इसके दो प्रकार है :-

क) लंघन द्वारा–अर्थात् स्वर को लांघना या छोड़ना।

ख) अना यास द्वारा–अर्थात् स्वर पर कम ठहराव करना।

त. बहुत्व–राग में किसी स्वर का अधिक प्रयोग बहुत्व कहलाता है। इसके भी दो प्रकार हैं।

क) अलंघन द्वारा–अर्थात् स्वर को बिना लांघे, उसका बार बार प्रयोग करना।

ख) अ यास द्वारा–अर्थात् स्वर पर अधिक ठहराव करना।

–. मंदू – प्राचीन काल में हर राग की मंदू स्थान में एक निश्चित सीमा होती थी। गायक को उसी सीमा के भीतर रहकर गाना होता था।

क. तार – मंदू स्थान की तरह तार स्थान में भी गायक को एक निश्चित स्थान तक गाने की छूट होती थी।

**क.क.ब आधुनिक राग लक्षण**

आधुनिक काल में रागों के नि नलिखित लक्षण माने जाते हैं :

क. राग में रजंकता का होना ज़रूरी है।

ख प्रत्येक राग किसी थाट से उत्पन्न होना चाहिए।

फ. किसी भी राग में कम से पांच स्वर होने चाहिए।

ब. किसी भी राग में मध्यम और पंचम स्वर एक साथ वर्जित नहीं होते।

भ. राग में कभी भी षड़ज स्वर वर्जित नहीं होता।

म. राग में एक ही स्वर के दो रूप कभी भी एक साथ प्रयु□त नहीं किए जाते।

## क.क.५. सारांश

प्राचीन काल तथा आधुनिक काल में रागों का गायन-वादन उनके निर्धारित लक्षणों के आधार पर ही किया जाता था।

## क.क.६. प्रश्न

क. How many Raag - Lakshan were in practice in ancient period. Explain.

2. Write down the definitions of the following terms :

   (i) Ansh Swar

   (ii) Alpatav

   (iii) Bahutav

## 1.2 Time Theory of Indian Ragas ( रागों का समय सिद्धांत )

### क.ख.क परिचय

उ□ार भारतीय संगीत में कुछ नियमों के आधार पर हर राग के गायन-वादन का निश्चित समय निर्धारण निश्चित किया गया है।

रागों के समय निर्धारण के मु य नियम नि नलिखित हैं :

### क.ख.ख पूर्वांग तथा उ□ारांगवादी राग

इस नियम के अनुसार सप्तक के सात स्वरों को दो भागों में बांटकर प्रथम भाग को पूर्व भाग एवं दूसरे भाग को उ□ार भाग कहा गया।

**पूर्व भाग** - स रे ग म प

**उ□ार भाग** - म प ध नी सं

जिन रागों का वादी स्वर सप्तक के पूर्व भाग में से होता है उनका गायन-वादन समय दिन के क्ख बजे से लेकर रात के क्ख बजे तक होता है एवं उन्हें 'पूर्वांगवादी' राग कहते हैं।

जिन रागों का वादी समय सप्तक के उǯार भाग से होता है उनका गायन-वादन समय रात्रि के क्ख बजे से लेकर दिन के क्ख बजे तक होता है और उन्हें 'उ□ारांगवादी' राग कहते हैं।

### क.ख.ग रे ध स्वर कोमल वाले राग (संधि प्रकाश राग)

इन्हें संधिप्रकाश राग भी कहते हैं। सूर्योदय तथा सूर्यास्त को संधिकाल कहा जाता है □योंकि इस समय दिन और रात की संधि होती है। संधि-प्रकाश रागों का समय प्रातः ब से स्त्र बजे तथा सांयकाल ब से स्त्र बजे तक आता है।

### प्रातःकालीन संधि प्रकाश राग

प्रातःकाल गाए-बजाए जाने वाले रागों को प्रातःकालीन संधिप्रकाश राग कहते हैं। इनमें रे ध कोमल तथा शुद्ध म की प्रबलता रहती है। जैसे— राग भैरव, रामकली आदि।

**सायंकालीन संधिप्रकाश राग**

सायंकाल में गाए-बजाए जाने वाले रागों को सायंकालीन संधिप्रकाश राग कहते हैं। इनमें रे ध कोमल एवं तीव्र म की प्रबलता रहती है। जैसे- राग पूर्वी।

**क.ख.ब रे ध स्वर शुद्ध वाले राग**

इन रागों में शुद्ध रे ध के साथ ग का शुद्ध होना भी ज़रूरी है। इनका समय संधिप्रकाश रागों के बाद प्रात: स्त्र से क तथा सायं स्त्र से क बजे आता है। इनमें कल्याण, खमाज, बिलावल थाट के राग आते हैं। सुबह के समय शुद्ध म तथा शाम को तीव्र म अधिक प्रभावशाली होता है।

**क.ख.भ ग नी स्वर कोमल वाले राग**

कोमल ग नि स्वर वाले रागों का समय दिन में क से लेकर ब बजे फिर रात्रि के क बजे से लेकर सुबह के ब बजे तक दो बार आता है। इस वर्ग के रागों में काफी, आसावरी, भैरवी एवं तोड़ी थाट के राग आते हैं।

**क.ख.म. ऋतुओं के आधार पर**

इन्हें ऋतुकालीन राग भी कहते हैं। इन रागों को निर्धारित ऋतुओं में गाने से इनका प्रभाव बढ़ जाता है। जैसे बसंत ऋतु में राग बसंत एवं वर्षा ऋतु में राग मियां-मल्हार।

**क.ख.त्र अध्वदर्शक स्वर**

किसी भी राग में केवल मध्यम के शुद्ध या तीव्र रूप से ही उस राग के प्रात:कालीन या सायंकालीन होने का आभास हो जाता है। प्रात:कालीन रागों में शुद्ध मध्यम एवं सायंकालीन रागों में तीव्र मध्यम प्रभावी होता है। रागों के समय निर्धारण में मध्यम स्वर को ही 'अध्वदर्शक स्वर' कहा जाता है।

**क.ख.त सारांश**

आधुनिक काल में रागों के समय सिद्धांत पर विचार-विमर्श चल रहा है रेडियो, दूरदर्शन, विद्यालय एवं मंच प्रदर्शन आदि में रागों के गायन-वादन के लिए राग समय-सिद्धान्त पद्धति का पालन पूरी तरह से करना स भव नहीं है।

**क.ख- प्रश्न**

1. Write in detail about Sandhi Prakash Raag.
2. What do you know about Poorvang and Uttarang Raags? Explain.

## 1.3 Margi and Deshi Sangeet (मार्गी एवं देशी संगीत)

### क.फ.क परिचय

संगीत के प्राचीन ग्रंथों में संगीतकला का प्रवाह सदैव दो धाराओं में प्रवाहित होता रहा है :-

क. गान्धर्व

ख गान

जिस संगीत का प्रयोग गान्धर्व लोग करते थे, उसे गान्धर्व संगीत कहा जाता था। भरत काल में गान्धर्व गान एक शास्त्र का रूप ले चुका था और इसमें स्वर, ताल और पद इन तीनों अंगों का होना जरूरी था। गान्धर्व संगीत, श□द प्रधान गान था। गान्धर्व संगीत का ही दूसरा नाम 'मार्गी' और 'गान' का दूसरा नाम 'देशी' संगीत है।

### क.फ.ख लक्ष्य

मार्गी संगीत का मु य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना था। जब हमारे पूर्वजों को यह अनुभव हुआ कि संगीत में मोक्ष प्राप्त करने के अतिरि□त लोकरंजन की क्षमता भी है तो संगीत का एक दूसरा रूप प्रचार में आया जिसे देशी संगीत अथवा गान कहा गया। आज का आधुनिक संगीत अनेक परिवर्तनों का परिणाम है जो मार्गी एव देशी संगीत की धाराओं से प्रवाहित होकर ही अपने आधुनिक स्वरूप में प्रकट हुआ है। अत: मार्गी एवं देशी संगीत का अध्ययन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आधुनिक संगीत का।

### क.फ.फ मार्गी संगीत

मार्गी का शाŽदक अर्थ है-मार्ग अर्थात् रास्ता और रास्ते से भाव है परमात्मा तक पहुंचने का रास्ता। ऋषियों-मुनियों, पीरों-पैग बरों और गुरुओं ने यह अनुभव किया कि संगीत में एकाग्रता करने की क्षमता है। सŽव गुणी संगीत मनुष्य के मन को अपने में लीन करके परमात्मा की भ€ित में लीन कर सकता है। तब उन्होंने इस संगीत का सहारा लिया, जिसको मार्गी संगीत का नाम दिया गया। मार्गी संगीत का मु य उद्देश्य अध्यात्मवाद ही था। उद्देश्य-पूर्ति के बाद उन्होंने इस संगीत

को कठोर नियमों में जकड़ दिया। इस संगीत में लोगों की रूचि के अनुसार कोई भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता था।

संगीतरत्नाकार के टीकाकार कल्लिनाथ के अनुसार मार्गी संगीत वह है जिसका प्रयोग महादेव के बाद भरत ने किया। मार्गी संगीत के वास्तविक रूप के बारे में स्पष्टीकरण करना कठिन है। आधुनिक युग में यह भी कहा जाता है कि मार्गी संगीत का स बन्ध सामवेद की ऋचाओं से माना जाता था।

### क.फ.ब. मार्गी संगीत की विशेषताएं

क. मार्गी संगीत का स बन्ध अध्यात्मवाद से था।

ख मार्गी संगीत का मु य उदेश्य मोक्ष प्राप्ति था

फ. मार्गी संगीत श□द प्रधान था।

ब. मार्गी संगीत को ईश्वर द्वारा निर्मित माना जाता है।

भ. मार्गी संगीत धार्मिक व सांस्कृतिक गुणों से परिपूर्ण था।

म. मार्गी संगीत के नियम अत्यंत कठोर थे।

ख्र मार्गी संगीत अचल संगीत था अत: इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन अस भव था।

### क.फ.भ देशी संगीत

जो संगीत आधुनिक काल में प्रचलित है तथा जो लोकरंजनकारी और परिवर्तनशील है, उसको गान अथवा देशी संगीत कहा जाता है। विभिन्न प्रदेशों में जो स्थानीय गीत प्रचलित हैं, वे ही देशी संगीत है। देशी संगीत का मु य उद्देश्य जनता का मनोरंजन करना है इसलिए इसके नियम बहुत कठोर नहीं हैं एवं लोक-रुचि के अनुसार इसमें समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। देशी संगीत प्रत्येक जाति एवं धर्म का असली रूप होता है। इसमें लोक संस्कृति के अंशों का बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया होता है।

### क.फ.म देशी संगीत की विशेषताएं

क. देशी संगीत स्वर प्रधान है।

ख देशी संगीत का मु य उद्देश्य लोकरंजन है।

फ. देशी संगीत परिवर्तनशील है।

ब. देशी संगीत के नियम कठोर नहीं है।

भ. देशी संगीत मनुष्य द्वारा निर्मित है।

## क.फ.त्र सारांश

इस प्रकार मार्गी संगीत एवं देशी संगीत दोनों का अपना-अपना महत्व है। मनुष्य द्वारा निर्मित देशी संगीत से जन-रंजन एवं ईश्वर द्वारा निर्मित मार्गी संगीत से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

## क.फ.त्र प्रश्न

1. Give comparative study of Margi and Deshi Sangeet.
2. What was the objective of Margi Sangeet ?

## क.फ.त्र पुस्तकों की सूचि

**IInd भाग & IIIrd भाग**


क. राग परिचय, भाग-फ हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, ख्फ

ख भारतीय संगीत सरिता, डॉ0 रमा सराफ, विद्यानिधि प्रकाशन, प्रथम संस्करण : ख्फ

फ. संगीत शास्त्र दर्पण, शान्ति गोवर्धन, एकेडमी प्रेस, दारागंज इलाहाबाद, संस्करण : ख्ब

ब. राग परिचय, भाग-क हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, ख्क

## 2.1 TAALI (ताली)

### ताल भूमिका

भारतीय संगीत का प्राण ताल है। इसके उत्पत्ति के विषय में फ्क अरुण कुमार सेन का मत है कि साहित्य में छंद का और संगीत में ताल का जन्म स्वाभाविक रूप से हुआ होगा। पं0अमर सिंह प्रणीत अमर कोष में 'ताल काल क्रिया आतम्' अर्थात् समय के नापने की क्रिया ताल है, आचार्यशाङ्र्गदेव ने 'संगीत रत्नाकार' में आधार या तल अर्थ वाले तल् धातु से ताल शब्द की उत्पत्ति मानी है। प्राचीन ग्रन्थों में 'ताल' नामक एक धन श्रेणी के वाद्य की चर्चा मिलती है।

### ख्क्क परिभाषा

किसी भी ताल की मात्राओं की गणना करते समय जिन मात्राओं पर ताली बजती है, उसे ताली या भरी कहते हैं। ताली - किसी ताल को करतल ध्वनि द्वारा प्रदर्शित करना ही 'ताली' या ताली देना है। इसका प्रचलन उत्तर और दक्षिण दोनों ताल पद्धतियों में समान रूप से है। इससे सशब्द क्रिया भी करते हैं। जैसे तीन ताल में पहली, पांचवी और तेहरवी मात्रा पर करतल ध्वनि करते हैं।

### ख्क्ख व्या या

किसी भी ताल में पहली मात्रा पर पड़ने वाली ताली पर सम (×) चिन्ह तथा उसके अतिरि€त अन्य विभागों की प्रथम मात्रा पर पड़ने वाली तालियों को क्रमानुसार ख, फ आदि अंकों द्वारा दर्शाया जाता है। जैसे तीन ताल की पहली, पांचवी और तेहरवीं मात्रा पर ताली हाथ द्वारा दी जाती है। यह एक सशद क्रिया है।

## 2.1 Khali (खाली)

### ख्ख्क परिभाषा

किसी भी ताल की मात्राओं की गणना करते समय जिस स्थान पर ताली न देकर केवल हाथ हिला दिया जाता है उसे खाली कहते हैं।

**ख.ख.ख व्या या**

खाली को निश□द क्रिया भी कहते हैं। अत: यह क्रिया का एक प्रकार है। विभिन्न तालों में खाली की सं या एक या एक से अधिक भी होती है। जैसे-तीन ताल में केवल नौंवी मात्रा पर खाली है तथा एकताल में तीसरी एवं सातवीं मात्रा पर खाली है। खाली को दर्शाने के लिए विभाग की जिस प्रथम मात्रा पर खाली हो उसके नीचे (ं) का चिन्ह लगाया जाता है। किसी विभाग की वह प्रथम मात्रा, जिस पर हाथ को एक ओर झुका कर संकेत दिया जाता है खाली कहते हैं। जैसे तीन ताल में तीसरे विभाग मै इसे पात या नि श□द क्रिया भी कहते हैं। जिस ताल में केवल एक खाली का विभाग होता है यह ताल के बीच में रखा जाता है। किसी ताल में एक से अधिक खाली भी हो सकता है। परन्तु किसी ताल में एक साथ एक से अधिक खाली साथ साथ नहीं होता प्रत्येक ताल में खाली का विभाग होना जरूरी भी नहीं है।

## 2.3 SUM (सम)

**ख.फ.क परिभाषा**

हर ताल की पहली मात्रा को सम कहा जाता है।

**ख.फ.ख व्या या**

गायन, वादन तथा नृत्य में सम का बहुत ाहǔवपूर्ण स्थान होता है। इन तीनों कलाओं में कलाकार अपनी कला को विभिन्न क्रियाओं एवं लय के साथ पेश करते हुए संगीतकार के साथ सम पर ही आकर मिलता है। सम को ज़ोर देकर विशेष अंदाज के साथ प्रकट किया जाता है। भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के अनुसार सम को (×) के चिन्ह से दर्शाया जाता है।

## 2.4 BHARI (भरी)

**ख.ब.क परिभाषा**

किसी भी ताल की मात्राओं की गणना करते समय जिन मात्राओं पर ताली बजती है, उसे ही ताली अथवा भरी कहा जाता है।

**व्या या**-यह एक सश□द क्रिया है। इसका प्रयोग तबला वादन में होता है।

## 2.5 AVARTAN (आवर्तन)

**ख.भ.क परिभाषा**

किसी ताल की पहली मात्रा से आखिरी मात्रा तक के क्षेत्र को 'आर्वतन' कहते हैं।

**ख.ख व्या या**

'आवर्तन' संस्कृत भाषा का श□द है जिसका अर्थ है गोलाकार, दोहराना या च□कर लगाना। किसी भी ताल का आवर्तन उस ताल की निश्चित मात्राओं पर निर्भर करता है। जैसे ; तीन-ताल क्म मात्राओं का ताल है, तो तीन ताल का एक आवर्तन क्म मात्राओं का हुआ है। इसी प्रकार एक-ताल का एक आवर्तन क्ख मात्राओं का हुआ। किसी भी ताल, गीत, गत या किसी सांगीतिक रचना का जब एक चक्र पूरा हो तो उसे एक आवर्तन, दो चक्र पूरा होने पर दो आवर्तन कहते हैं। कहने का अर्थ ये है कि किसी ताल की पहली मात्रा से आखिरी मात्रा तक जितने च€कर लाए जाएं, उतने ही आवर्तन माने जाते हैं।

## 2.6 MEEND (मींड)

**ख.म.क परिभाषा**

क) संगीत में जब एक स्वर से दूसरे स्वर तक ध्वनि को खण्डित किए बिना गाया या बजाया जाता है तो उसे मींड कहते हैं।

ख) सितार में एक ही परदे पर, तार खींच कर एक स्वर से दूसरे, तीसरे या चौथे स्वर को जब बीच की ध्वनि को खंडित किए बिना बजाया जाता है तो उसे मींड कहते हैं।

**ख.म.ख व्या या**

भारतीय संगीत में मींड का बहुत महžवपूर्ण स्थान है। इस क्रिया का प्रयोग गायन तथा वादन दोनों में होता है। मींड के प्रयोग से गायन-वादन का सौंदर्य बढ़ता है। मींड लेते समय एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय जो उन दो स्वरों के मध्य का अंश होता है उससे गायन-वादन में मिठास उत्पन्न होती है।

**मींड का चिन्ह-** भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में मींड के लिए उल्टे अर्द्धचन्द्रमा के चिन्ह ( ⁀ ) का प्रयोग किया जाता है। जैसे $\overset{⁀}{\text{सरे}}$

**ख.म.प मींड के प्रकार**

मींड के दो प्रकार हैं

क) अनुलोम मींड

ख) विलोम मींड

**क) अनुलोम मींड**- इसमें पहले मिज़राब लगाई जाती है, फिर तार खींचा जाता है।

जैसे— स के परदे पर मिज़राब के आघात से स बजाकर, उसी आघात द्वारा उत्पन्न ध्वनि को अखंडित किए बिना स के परदे पर ही रे पर आकर रुकना।

**ख) विलोम मींड**- इसमें पहले तार खींचा जाता है फिर मिज़राब द्वारा आघात किया जाता है। जैसे— स के परदे पर ही तार खींचकर पहले रे पर आकर, फिर मिज़राब द्वारा आघात कर रे से स पर जाना।

## 2.7 KAN (कण)

### ख्त्र.क परिभाषा

गाते बजाते समय जब किसी स्वर के आगे या पीछे के स्वर का केवल स्पर्श किया जाता है तो उसे कण स्वर कहा जाता है।

### ख्त्र.ख व्या या

कण की क्रिया को 'स्पर्श' भी कहते हैं €योंकि इसमें हम गाए जा बजाने वाले मु य स्वर के अगले या पिछले स्वर का केवल स्पर्श ही करते हैं। कण का प्रयोग गायन-वादन में सौंदर्य की उत्पटिं। के लिए होता है।

### ख्त्र.फ कण के प्रकार

कण के मु य रूप से दो प्रकार हैं—

क) पूर्व लगन कण

ख) अनुलगान कण

**क) पूर्व लगन कण—**पूर्व लगन कण मु य स्वर के प्रयोग से पहले लगाया जाता है।

**ख) अनु लगन कण—**अनुलगन कण मु य स्वर के प्रयोग के बाद लगाया जाता है।

### कण का चिन्ह

भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के अनुसार कण स्वर को मु य स्वर के उपर लिखा जाता है।

पूर्व लगन कण- ग म

अनु लगन कण— ग म

## 2.8 KRINTAN (कृन्तन)

### ख.त.क परिभाषा

जब बाएं हाथ की तर्जनी उंगली को एक परदे पर रखकर, मिज़राब के एक ही आघात से एक स्वर तथा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के प्रयोग से दो या दो से अधिक स्वर एक साथ बजाए जाएं तो उसे 'कृन्तन' कहते हैं।

### ख.त.ख व्या या

इसमें पहला स्वर मिज़राब से तथा अन्य स्वरों के लिए मध्यमा उंगली का प्रयोग होता है। कृन्तन में स्वर अपने खड़े रूप में अर्थात बिना मींड के केवल पर्दों पर ही बजाए जाते हैं। कृन्तन तंत्र-वादन की एक महŠवपूर्ण क्रिया है। सितार में तंत्रकारी अंग की वादन शैली में इसका विशेष प्रयोग होता है। पं0 रविशंकर जी अपने सितार वादन में कृन्तन का बहुत प्रयोग करते थे।

## 2.9 ZAMZAMA (ज़मज़मा)

### ख-.क परिभाषा

जब सितार के किसी पर्दे पर तर्जनी उंगली रखकर मिज़राब के आघात द्वारा वह स्वर बजाने के साथ ही, उस पर्दे से अगले पर्दे के स्वर पर मध्यमा उंगली द्वारा दो बार आघात करके उस पर्दे के स्वर की ध्वनि उत्पन्न की जाए तो उसे ज़मज़मा कहते हैं।

### ख-.ख व्या या

ज़मज़मा का प्रयोग मु यता: परदे वाले तंत्री वाद्यों में होता है। इसमें मिज़राब के एक ही आघात से एवं मध्यमा उंगली के प्रयोग से दो स्वर एक साथ बजाए जाते हैं।

तंत्रकारी अंग के सितार वादन में ज़मज़मा का बहुत प्रयोग होता है। ज़मज़मा का प्रयोग पं रविशंकर जी की वादन शैली का मु य अंग है।

ज़मज़मा को दर्शाने के लिए स्वर के ऊपर $\overset{w}{}$ इस चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे $\overset{w}{\text{सं}}$

## 2.10 GHASEET (घसीट)

### ख.क.क परिभाषा

किसी भी परदे वाले तंत्री वाद्य में, किसी एक स्वर से अन्य किसी भी स्वर पर जब उंगली घसीट कर जाया जाता है तो उसे 'घसीट' कहते हैं।

**ख.क.ख व्या या**

घसीट बजाते समय किसी एक स्वर को परदे पर बजाकर अन्य किसी भी स्वर तक उंगली घसीट कर इस प्रकार जाते हैं कि बीच में आने वाले सभी स्वरों के परदों पर स्पर्श होता जाए और उनकी ध्वनि भी कानों को अप्रिय न लगे।

'घसीट' का प्रयोग परदे वाले तंत्री वाद्यों पर होता है एवं यही क्रिया जब बिना परदे वाले तंत्री वाद्यों पर होती है तो इसे 'सूत' कहते हैं।

**ख.क्क प्रश्न**

1. Write short notes on the following terms :
   i) Aavartan
   ii) Taali
   iii) Ghaseet
2. Write down the definition of two technical terms used in the Tantrakari Ang of Sitar Playing.
3. Write in short about meend and its types.
4. Give the definitions of any two technical terms used in tabla playing.

**ख.क्ख पुस्तकों की सूचि**


क. सितार मालिका, भगवत शरण शर्मा, डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, सातवां संस्करण, अगस्त क--१

ख तबला कौमुदी, प्रथम भाग, रामशंकर, पागलदास, रामचन्द्र संगीतालय, चुतर्थ संस्करण

फ. राग विशारद, वसंत, संगीत कार्यालय हाथरस, चौबीसवां संस्करण

ब. ताल, गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, साउथ मलाका, इलाहाबाद-ख्क्क प

## फ.क स्वामी हरिदास

### फ.क.क परिचय

स्वामी हरिदास उन विभूतियों में से थे जिन्होंने संगीत की रंजकता और आध्यात्मिकता का एकीकरण कर दोनों के मधुर स बन्ध को जनता के समक्ष रखा। संगीत द्वारा आध्यात्मिक क्षेत्र में व्य€त कितना ऊँचा उठ सकता है यह स्वामी जी के जीवन से परिलक्षित होता है।

### फ.क.ख जन्म एवं परिवार

स्वामी हरिदास जी का जन्म भाद्रपद शु□ला अष्टमी संवत् क्भ्– में अलीगढ़ जिले के एक गाँव में हुआ जिसका नाम उनके नाम पर ही बाद में हरिदासपुर हो गया। इनके पिता का नाम श्री आशु धीर था जो कि मुल्तान के निवासी और ब्राह्मण थे। इनकी माता का नाम गंगा देवी था।

स्वामी जी का विवाह भी अल्पायु में ही हो गया था परन्तु अपने वैरागी स्वभाव के कारण वह अपने वैवाहिक धर्म का निर्वाह नहीं कर पाए। विवाह के कुछ वर्ष उपरांत वृन्दावन चले गए। जाते समय इन्होंने अपनी पत्नी हरिमती जी से साथ चलने को कहा परन्तु यह सुनकर उनके लाख के चूड़े से अग्नि प्रज्जवलित हुई और वह परलोक सिधार गई।

### फ.क.फ सांगीतिक कार्य

पच्चीस वर्ष की अवस्था में ही वह विर□त हो गए और वृन्दावन में आकर भगवद्-भजन में लीन हो गए। यहीं पर उन्होंने अनेक ध्रुवपद, गीतों की रचना की तथा उन्हें शास्त्रो€त रागों व तालों में बांधा। ब्रज की रास-लीला परिपाटी स्वामी जी की ही चलाई हुई है। उन्होंने संगीतज्ञों में आत्माभिमान की भावना को जागृत किया।

### फ.क.ब आध्यात्मिकता

एक बार बादशाह अकबर ने तानसेन से उनके गुरु 'स्वामी हरिदास' जी का गायन सुनने की इच्छा प्रकट की। इस पर तानसेन ने उनसे कहा कि ''मेरे गुरुदेव तो योगी पुरुष हैं इसलिए वह दरबार में कभी नहीं आएँगे। उनका गायन सुनने के लिए आपको स्वयं वृन्दावन जाना

पड़ेगा।'' संगीत प्रेमी अकबर, अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए वेष बदलकर तानसेन के साथ उनके आश्रम पहुँचे। स्वामी जी अंतरद्रष्टा थे, अतः एक ही नज़र में वह अकबर को पहचान गए और तानसेन से बोले कि बादशाह को इतनी तकलीफ देकर काहे को साथ लाए हो। यह सुनकर तानसेन ने अकबर के वहां आने का कारण बताया तो स्वामीजी ने प्रसन्नतापूर्वक बादशाह को अपना गायन सुनाया। स्वामी जी के दिव्य संगीत को सुनकर बादशाह आत्मविभोर हो गए और उन्होंने अपने साथ लाए हुए रत्न स्वामी जी के आगे रख दिए। स्वामी जी ने मुस्कराते हुए कहा—'मैं सन्यासी हूँ, रत्नों का €या करूँगा ? और यदि रत्न ही देना चाहते हो तो नेत्र बंद करके सुनो।' यह कहते हुए स्वामी जी ने एक चीज़ गाई जिसे अकबर ध्यानमग्न हो सुन रहे थे। गायन के समाप्त होने पर जब अकबर की आँखें खुलीं तो स्वामी जी ने पूछा—'कहो, कुछ देखा ?' बादशाह बोले—'हाँ, मैंने देखा कि यमुना जी में रत्नों का एक घाट बना हुआ है, गोपियाँ जल भरने आई हैं, उसी घाट की एक सीढी टूटी हुई है, कृष्ण जी भी वहां खड़े हैं और गोपियों को टूटी सीढ़ी से सावधान रहने की सूचना दे रहे हैं।' स्वामी जी ने कहा—'ठीक है, तुम हमको जो रत्न देते थे, उनके द्वारा उस टूटी हुई सीढ़ी को बनाय दो।' तब अकबर की समझ में आया कि स्वामी जी की इच्छा पूरी करने योग्य मेरे पास रत्न कहाँ हैं।

### फ.क.६ मृत्यु

संवत् क्म्भ् विक्रमी को -६ वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हो गई।

### फ.क.म सारांश

स्वामी हरिदास जी की सांगितिक क्षमता इतनी उच्च और आध्यात्मिक कोटि की थी कि बड़े से बड़े राजा-महाराजा भी उनका गायन सुनने को तरसते थे।

### फ.क.त्र प्रश्न

क. स्वामी हरिदास के शिष्यों के नाम बताओ।

ख स्वामी हरिदास के कौन से शिष्य बादशाह अकबर के दरबारी गायक थे।

## फ.ख तानसेन

### फ.खक परिचय

अकबर के दरबार में कई गायक एवं वादक थे जिनमें तानसेन की श्रेष्ठता और योग्यता भिन्न थी। वह माँ सरस्वती के उपासक थे और उनका कंठ एवं गायन शैली अत्यन्त मोहक और प्रभावशाली थी।

### फ.खख जन्म एवं परिवार

संगीत सम्राट तानसेन की जन्म तिथि के बारे में मतभेद है। कुछ विद्वानों के मतानुसार तानसेन का जन्म सन् क्भ्म् में, ग्वालियर से ख्त् मील दूर बेहट नामक एक छोटे से गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम तनू था, बाद में तन्ना मिश्र फिर उसके बाद तानसेन हो गया। इनके पिता का नाम मकरंद पांडे था।

### फ.खप संगीत शिक्षा

तानसेन के पिता ने इन्हें बचपन में ही वृन्दावन के 'स्वामी हरिदास' के पास संगीत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज दिया। वृन्दावन में स्वामी जी के निकट रहकर तन्ना मिश्र ने दस वर्ष तक संगीत की शिक्षा ग्रहण की, जिसके पश्चात वह एक महान गायक समझे जाने लगे।

### फ.खब सांगीतिक प्रतिभा

तानसेन सर्वप्रथम रीवाँ के महाराजा के दरबार में गायक नियु□त हुए। एक बार बादशाह अकबर रीवाँ आए जहाँ उन्होंने तानसेन का गायन सुनने का अवसर मिला। तानसेन के गायन से वह इतने प्रभावित हुए कि रीवाँ नरेश ने उपहार के रूप में तानसेन को अकबर की भेंट कर दिया। तानसेन को अकबर के दरबार का सर्वश्रेष्ठ गायक होने का गौरव प्राप्त था।

### फ.खभ सांगीतिक रचनाएं

तानसेन को मूर्च्छना पद्धति, रस, अलंकार, नायिका भेद इत्यादि का ज्ञान प्राप्त था। उन्होंने हिन्दू देवी-देवता की प्रशंसा, प्रकृति सौन्दर्य एवं नाद ब्रह्म से स बन्धित अनेक ध्रुवपदों

की रचनाएं की हैं। इसके अतिरि□त उन्होंने बादशाह अकबर एवं राजा रामचन्द्र बघेला की प्रशंसा में भी अनेक ध्रुवपद लिखे हैं।

राग दरबारी कान्हड़ा, मियां की मल्हार, मियां की तोड़ी एवं मियां की सांरग की रचना मियाँ तानसेन ने ही की है।

**फ.ख.म वंश पर परा**

तानसेन की पहली पत्नी हिन्दु थी, जिससे उन्हें हमीर सेन और सूरत सेन दो पुत्र हुए एवं दूसरी पत्नी जो मुसलमान थी से तान तरंग एवं विलास खां दो पुत्र हुए।

कुछ विद्वानों के अनुसार तानसेन की एक पुत्री भी थी जो वीणा वादक थी। तानसेन के वंशज सैनिया कहलाते है। तानसेन की पुत्री पर परा के वंशज बीनकार तथा पुत्र पर परा के वंशज ध्रुवपद गायक एवं रबाबी कहलाते हैं।

**फ.ख.त्र मृत्यु**

तानसेन की मृत्यु फरवरी, क्ष्त्भ् ई0 में, दिल्ली में हुई परन्तु उनकी इच्छानुसार फकीर मोह मद गौस के बराबर ही उनकी समाधि बनवा दी गई।

**फ.ख.त्त सारांश**

बादशाह अकबर सहित आरा समाज तानसेन की कला-प्रतिभा पर मुग्ध था। उनके बारे में संगीत के द्वारा पानी बरसाना, जंगली पशुओं को बुलाना, रोगियों को ठीक करना आदि अनेक चमत्कारी घटनाएँ प्रसिद्ध हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि उन्हें राग-रागिनियाँ सिद्ध हो चुकी थीं।

**फ.ख- प्रश्न**

क. तानसेन ने किन रागों की रचना की थी?

ख तानसेन के वंशज □या कहलाते हैं?

## फ.फ अमीर खुसरो

### फ.फ.क परिचय

अमीर खुसरो को क्व्वीं शता□दी के संगीत का प्रतिनिधि माना जाता है। लगभग इसी काल से भारतीय संगीत का एक नया अध्याय प्रार भ होता है।

### फ.फ.ख जन्म एवं परिवार

अमीर खुसरो का जन्म सन क्ख्प्फ ई0 में एटा जिले के पटियाली नामक ग्राम में हुआ था। इनका वास्तविक नाम अबुल हसन था। इनके पिता का नाम मोह मद सैफूद्दीन था। सन् क्ख्ब् ई0 के लगभग खुसरो के पिता एक युद्ध में मारे गए और अमीर खुसरों का लालन पालन उनके नाना के संरक्षण में हुआ। पिता की मृत्यु के बाद खुसरो तत्कालीन दिल्ली के शासक गयासुद्दीन बलबन के आश्रय में रहे। कुछ समय के बाद वह अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में चले गए, जो संगीत का प्रेमी था। अलाउद्दीन खिलजी अमीर खुसरो को बहुत चाहते थे। अलाउद्दीन खिलजी संगीत एवं साहित्य का बहुत प्रेमी था तथा अमीर खुसरो से विशेष प्रभावित था। अमीर खुसरो की साहित्य एवं सांगीतिक प्रतिभा से प्रभावित होकर अलाउद्दीन ने उन्हें न सिर्फ स मान दिया एवं उन्हें मन्त्री के पद पर भी नियु€त रखा।

### फ.फ.फ सांगितिक कार्य

अमीर खुसरो बचपन से ही बुद्धिमान थे तथा साहित्य और संगीत में उन्हें विशेष रूचि थी। बचपन में ही वह शेख निज़ामुद्दीन के मुरीद हो गए थे, और अपनी रचनाएं सबसे पहले निज़ामुद्दीन चिश्ती की सेवा में प्रस्तुत करते थे। खुसरो, संस्कृत, फारसी के विद्वान कवि तथा गायक थे जिन्होंने अनेक प्रकार के वाद्यों, रागों, गायन-प्रकार तथा तालों का आविष्कार किया। उन्होंने फारसी के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन तथा प्रत्येक कवि की शैली का अनुकरण किया। इसके साथ ही उन्होंने कई भाषाओं का अध्ययन भी किया जिनमें फारसी, अरबी, तुर्की, हिन्दी उल्लेखनीय है।

अमीर खुसरो में यह विशेषता थी कि वे भारतीय रागों को सुनने के पश्चात् उसी तरह के फारसी राग तैयार करके सुना देते थे। उन्होंने फारसी एवं हिन्दुस्तानी रागों के मिश्रण से अनेक रागों की रचना की थी जिनमें साज़गिरि, जिल्फ, ऐमन, सरपरदा, शहाना आदि रागों के नाम उल्लेखनीय हैं।

**फ.फ.७ गायन विधाओं का आविष्कार**

याल, कव्वाली और तराने के आविष्कारक होने का श्रेय भी अमीर खुसरो को ही जाता है।

**फ.फ.८ संगीत वाद्यों का आविष्कार**

इसके अतिरि□त अमीर खुसरो को सितार का आविष्कारक भी माना जाता है। उन्होंने वीणा की तार पर तीन तार लगाकर इसका नाम 'सहतार' रखा। फारसी में सह का अर्थ होता है तीन। इस प्रकार 'सहतार' का अर्थ हुआ तीन तार वाला। आगे चलकर इसी तीन तार वाले वाद्य का रूप बदलते बदलते 'सितार' हो गया जिसमें आज सात तार लगाने का प्रचार है।

कुछ विद्वान अमीर खुसरो को **तबला का आविष्कारक** भी मानते हैं।

**फ.फ.९ मृत्यु**

सन् क्फ्ख्ब ई0 के लगभग उनके उस्ताद निज़ामुद्दीन औलिया का निधन हो गया जिससे इनके हृदय को गहरा सदमा पहुँचा और वह विर□त होकर रहने लगे। उस्ताद के निधन के लगभग छः महीने बाद सन् क्फ्ख्भ ई0 में अमीर खुसरो का भी देहान्त हो गया। इनकी कब्र भी इनके उस्ताद निज़ामुद्दीन औलिया की समाधि के पास ही दिल्ली में मौजूद है जहाँ प्रतिवर्ष उनकी याद में उर्स मनाया जाता है एवं गज़ल, कव्वाली आदि गाई जाती हैं।

**फ.फ.ब्र सारांश**

इस प्रकार अमीर खुसरो ने संगीत के क्षेत्र में नए आविष्कार कर एक नया वातावरण प्रदान किया।

**फ.फ.त्त प्रश्न**

क. अमीर खुसरो को किन वाद्य यंत्रों का आविष्कारक माना जाता है।

ख अमीर खुसरो द्वारा किन गायन विधाओं का आविष्कार हुआ।

**फ.फ.- पुस्तकों की सूचि**


क. हमारे संगीत रत्न, लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, तृतीय संस्करण

ख संगीत विशारद, बसंत, संगीत कार्यालय हाथरस, उन्नीसवां संस्करण, क--क

फ. राग परिचय, भाग-क, प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत सदन प्रकाशन, ख्क

ब. निबन्ध संगीत, लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, द्वितीय संस्करण, नवंबर, क-त्त-

भ. संगीत शास्त्र दर्पण, भाग-ख, शान्ति गोवर्धन, पाठक पॅ्लकेशन

# *Directorate of Distance Education*

**UNIVERSITY OF JAMMU**
**JAMMU**

# SELF LEARNING MATERIAL

**B.A. SEMESTER – II**

**Subject : INDIAN MUSIC** **Course No. : MU-201**

*Course Co-ordinator :*
**Dr. RAJBER SINGH SODHI**

*http:/www.distanceeducationju.in*
*Printed and Published on behalf of Directorate of Distance Education, University of Jammu by the Director, DDE, University of Jammu, JAMMU–180 006.*

# INDIAN MUSIC


*Section A* : **Dr. USHA (Ex. H.O.D. Music)**

*Section B* : **Asstt. Prof. Priyanka Sharma**

*Proof Reading by* : **Dr. Usha**



© Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu 2021

- All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any from, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the DDE, University of Jammu.
- The Script writer shall be responsible for the lesson/script submitted to the DDE and any plagiarism shall be his/her entire responsibility.



*Printed by :* S.K. Printers, Moti Bazar, Jammu / 2021 / 200

D:\Arun\Music-Composing.p65 (64)
D:\Arun\Music-Composing.p65 (64)